टिप्पणी

14

महादेवी वर्मा

प्रेम और वियोग मानव-मन की कोमल भावनाएँ हैं। कुछ लोग इन्हें अभिव्यक्त कर लेते हैं किंतु जो नहीं कर पाते वे घुटते रहते हैं। कुछ इन भावनाओं को सर्वव्याप्त मान लेते हैं। उन्हें लगता है कि प्रकृति में भी वही सब कुछ घट रहा है, जो उनके मन में है। बादलों का उमड़ना और बरसना उन्हें अपनी ही विरह वेदना का उमड़ना-बरसना प्रतीत होता है और वे अपनी वेदना को बाँटकर नवजीवन के अंकुरित होने की प्रतीक्षा करते हैं। ऐसे ही भावों का चित्रण हमें महादेवी जी की कविताओं में प्राप्त होता है। आपने पंत, प्रसाद और निराला की कविताएँ पढ़ते हुए छायावादी काव्य के कुछ लक्षणों की जानकारी भी प्राप्त की होगी। महादेवी के गीतों में भी छायावाद की स्पष्ट झलक मिलती है। वह ऐसी समर्थ कवयित्री हैं, जो अपनी भावनाओं को प्रकृति के माध्यम से सशक्त रूप में प्रस्तुत करती हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- कविता का केंद्रीय भाव बता सकेंगे;
- कविता के आधार पर नारी के जीवन की एक जल भरी बदली से तुलना कर सकेंगे;
- कवयित्री की संवेदना का कारण स्पष्ट कर सकेंगे;
- प्रस्तुत कविता में छायावाद की विशेषताओं को पहचान सकेंगे;
- प्रस्तुत कविता के शिल्प-सौंदर्य को बता सकेंगे।

क्रियाकलाप

अगले पृष्ठ पर चित्र को देखिए। कल्पना कीजिए कि आप ही बादल हैं। बादल के रूप में अपने अनुभव लगभग पाँच पक्तियों में लिखिए।

14.1 मूलपाठ

आइए, महादेवी वर्मा के निम्नलिखित गीत को एक बार लय के साथ पढ़ लें–

मैं नीर भरी दुख की बदली!

मैं नीर भरी दुख की बदली!

स्पंदन में चिर निस्पंद बसा,
क्रंदन में आहत विश्व हँसा,

नयनों में दीपक-से जलते,
पलकों में निर्झरिणी मचली !

मेरा पग-पग संगीतभरा,
श्वासों से स्वप्न-पराग झरा,

नभ के नव रंग, बुनते दुकूल,
छाया में मलय-बयार पली!

मैं क्षितिज-भृकुटि पर घिर धूमिल,
चिंता का भार बनी अविरल,

रज-कण पर जल-कण हो बरसी,
नवजीवन-अंकुर बन निकली !

पथ को न मलिन करता आना,
पद-चिह्न न दे जाता जाना,

सुधि मेरे आगम की जग में,
सुख की सिहरन हो अंत खिली!

विस्तृत नभ का कोई कोना,
मेरा न कभी अपना होना,

परिचय इतना, इतिहास यही,
उमड़ी कल थी मिट आज चली!

शब्दार्थ

नीर भरी – जल से पूर्ण, आँसुओं से भरी
स्पंदन – हलचल, धड़कन
निस्पंद – स्थिर
क्रंदन – चीख-पुकार, बादल का शोर
आहत – पीड़ित, चोट खाया हुआ
निर्झरिणी – झरना, नदी
पराग – फूलों के रजकण, केसर
दुकूल – वस्त्र, दुपट्टा, उत्तरीय
मलय-बयार – मलय पर्वत से आने वाली शीतल सुगंधित वायु
क्षितिज-भ कुटि – क्षितिज-सी भौंहें
क्षितिज – धरती और आकाश जहाँ मिले हुए दिखाई पड़ते हैं।
धूमिल – धुँए के रंग के, काले
अविरल – निरंतर, लगातार
रज-कण – मिट्‌टी
मलिन – गंदा
आगम – आना, आगमन
सिहरन – पुलक, कँपकपी
नभ – आकाश

14.2 बोध प्रश्न

1. कवयित्री अपने आप को क्या मान रही है?

   ....

2. वर्षा कबऽनवजीवन अंकुर बनती है?

   ....

14.3 आइए समझें

आइए,ऽ'मैं नीर भरी दुख की बदली' गीत को एक बार फिर पढ़ लें।

प्रसंग

आप देख रहे हैं कि यह गीत एक बदली पर आधारित है। पहली ही पंक्ति में बदली अपना सीधा परिचय दे देती है–'मैं नीर भरी दुख की बदली', इसमें यह 'मैं' कौन है? 'मैं' को समझ लेने के बाद कविता समझना सरल हो जाएगा। प्रथम तो स्पष्ट है कि 'बदली' अपना परिचय दे रही है तो 'बदली' ही 'मैं' है। वह 'नीर भरी' है क्योंकि वही जल बरसाती है। वाक्य का स्त्रीलिंग में होना और बदली के साथ 'दुख की' पद यह संकेत भी देता है कि 'मैं' स्वयं कवयित्री के लिए या किसी वेदना-ग्रस्त नारी के लिए भी हो सकता है। इस प्रकार पूरी कविता को अर्थ दो समानांतर स्तरों पर लगाया जा सकता है। पहला – जलपूर्ण उमड़ते-घुमड़ते बादल; और दूसरा–दुखी और वेदनाग्रस्त नारी, जो स्वयं कवयित्री भी हो सकती है।

अब पहली पाँच पंक्तियाँ पुनः पढ़ जाइए।

मैं नीर भरी दुख की बदली!
स्पंदन में चिर निस्पंद बसा,
क्रंदन में आहत विश्व हँसा,
नयनों में दीपक-से जलते
पलकों में निर्झरिणी मचली!

'मैं', का आशय आप समझ चुके हैं। अतः कविता का प्रसंग भी समझ गए होंगे। इसमें एक ओर तो वर्षाजल से भरी बदली अपना परिचय दे रही है, दूसरी ओर स्वयं कवयित्री अपने वेदनापूर्ण जीवन का संकेत कर रही है।

व्याख्या

पहले 'बदली' के पक्ष में देखें। उसकी हर गर्जना के पीछे, हलचल के पीछे भी स्थिरता बसी है। मानो कोई है जिस पर इस क्रंदन का कोई प्रभाव नहीं होता, वह निस्पंद रहता है। जबकि उस गर्जना पर विश्व प्रसन्न होता है क्योंकि वह भीषण गरमी से आहत है, दुखी है, इसलिए बादलों की हलचल और गर्जन उसे प्रसन्न कर जाती है। बादलों में बसी विद्युत की कौंध दीपकों-सी प्रतीत होती है और उनमें स्थित जल नदी की भाँति प्रवाहित होने को आतुर है।

दूसरी ओर विरहिणी के पक्ष में भाव होगाः उसके स्पंदन में वह चिर निस्पंदन बसा है, जो सदा से स्पंदन रहित है, स्थिर है, बादलों की गर्जना में पीड़ित और चोट खाए हुए

संसार के लोगों की पीड़ा ही अभिव्यक्त हो रही है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह गर्जन किसी की पीड़ा के स्वर नहीं, बल्कि कोई ज़ोर-ज़ोर से हँस रहा हो परंतु यह किसी एक प्रेमी का क्रंदन है।

विरहिणी की आँखों में दीपक से जलते रहते हैं। ये दीपक विरहाग्नि के भी हो सकते हैं और आशा के भी। आँसू उसकी पलकों से नदी के समान बहने को आतुर हैं वह अपनी विरह-वेदना को आँसुओं के रूप में प्रवाहित करना चाहती है; ठीक वैसे ही, जैसे बदली जलबूँदों को। भाव स्पष्ट है कि कवयित्री कहना चाहती है कि जिस प्रकार बदली पानी से भरी रहती है, उसी प्रकार मेरी आँखें भी अश्रुपूर्ण रहती हैं।

अंश - 2

कविता की अगली आठ पंक्तियाँ पुनः ध्यानपूर्वक पढ़ जाइए।

मेरा पग-पग संगीतभरा,
श्वासों से स्वप्न-पराग झरा,
नभ के नवरंग, बुनते दुकूल,
छाया में मलय-बयार पली!
मैं क्षितिज-भ कुटि पर घिर धूमिल,
चिंता का भार बनी अविरल,
रज-कण पर जल-कण हो बरसी
नव जीवन-अंकुर बन निकली!

नीर भरी बदली अपनी स्थिति का आगे वर्णन कर रही है: मेरे तो कदम-कदम पर संगीत है– बिजली की कड़क, बादलों का गर्जन उसके आने की प्रसन्नता में मानव-जगत या पशु-जगत की हलचल ही मानो उसके पग-पग का संगीत है। बादलों के उमड़ने के साथ चलने वाली हवा उसकी साँसें हैं, जिनसे पराग झरता है। उसे कवयित्री ने 'स्वप्न-पराग' कहा है। बादलों के साथ लोगों के स्वप्न जुड़े हैं। उनके घुमड़ने पर मानो वही स्वप्नों से पराग झरता है। नवरंगों से युक्त इंद्रधनुषी आभा ही मानो बादलों के रंग भरे वस्त्र हैं। बादलों की छाया में मलय-बयार, शीतल सुगंधित पवन आश्रय ग्रहण करती है। जब बादल घुमड़ते हैं तो शीतल हवा बहने लगती है। वही कवयित्री के शब्दों में 'मलय-बयार' है। वह कहती हैं कि प्रियतम की स्मृति मुझे मलय पर्वत से आने वाली शीतल-मंद सुगंधित वायु के समान प्रतीत होती है।

धुएँ जैसे बादल जब क्षितिज पर छाते हैं तो कवयित्री को लगता है मानो क्षितिज की भौंहों पर चिंता का भार बढ़ गया हो। मूर्त की तुलना अमूर्त से करना छायावादी कविता की एक विशेषता है। यहाँ भी मूर्त बादलों की तुलना अमूर्त 'चिंता का भार' से की गई है, ऐसी कल्पनाएँ आपको अन्यत्र भी मिलेंगी।

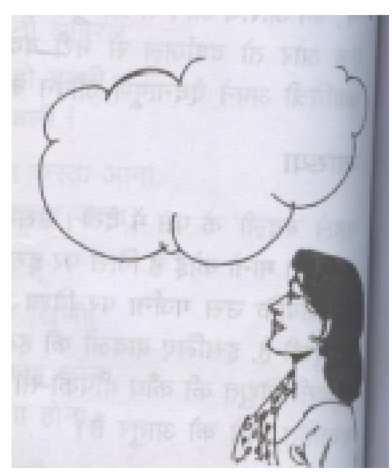

ऐसी बदली जब 'रज-कण' अर्थात् मिट्टी पर बरसती है तो परिणाम क्या होता है? चारों ओर नवजीवन के अंकुर फूट आते हैं। जो बीज मिट्टी के नीचे दबे पड़े थे, वे वर्षा की बूँदों के स्पर्श से अंकुरित होने लगते हैं। यह अंकुरण ही नवजीवन का प्रस्फुटन है और बदली का यह कहना उचित है कि वही रजकण से नव-जीवन-अंकुर बन कर निकल पड़ती है।

ये पंक्तियाँ स्पष्टतः बादलों के घुमड़ने, बरसने और अंकुरण का कारण बनने की प्रक्रिया और उससे जुड़े प्राकृतिक क्रिया-कलापों के सौंदर्य का चित्रण कर रही हैं, पर विरहिणी पक्ष में भी इनका भावार्थ ग्रहण किया जा

सकता है। विरहिणी के पदचापों में संगीत है (यौवन का, रूप का) और उसकी सुगंधित साँसें उसकी कामनाओं की सूचक हैं। उसके रंगीन वस्त्रों में इंद्रधनुषी आभा है और वह जहाँ निकल जाती है वहीं सुगंध ऐसे बिखरती है मानो सुगंधित मलय-बयार चल पड़ी हो। उसकी भौंहों पर इस चिंता का भार है कि प्रिय से मिलन हो पाएगा या नहीं। अंततः जब उससे व्यथा-भार सहन नहीं होता तो उसकी आँखों से आँसू बरस पड़ते हैं। आवेग की अभिव्यक्ति से उसे क्षण भर को शांति मिलती है। उसे लगता है कि नए जीवन के अंकुर फूट पड़े हैं। आँसू बरसाकर विरहिणी मानो संसार को अपनी वेदना का वितरण करती है और उसे नया जीवन प्रदान करती है। कवयित्री अपनी विरह-वेदना को लाक्षणिक शब्दावली द्वारा व्यक्त करती है।

अंश - 3

गीत के शेष अंश को एक बार फिर से पढ़ जाइए।

पूर्व पंक्तियों में बदली ने अपने घुमड़ने और बरसने की चर्चा की है। अब वह बरसने के बाद के प्रभाव की कल्पना करती है।

> पथ को न मलिन करता आना,
> पद-चिह्न न दे जाता जाना,
> सुधि मेरे आगम की जग में
> सुख की सिहरन हो अंत खिली!
> विस्त त नभ का कोई कोना,
> मेरा न कभी अपना होना,
> परिचय इतना इतिहास यही
> उमड़ी कल थी मिट आज चली!

बदली कहती है, न तो मेरे आगमन से मार्ग गंदा होता है, न चले जाने के बाद कोई पद-चिह्न शेष रह जाते हैं। यहाँ बदली के मार्ग की बात है और उसका मार्ग धरती नहीं आकाश मार्ग है। उस पर न तो बादलों के बरसने से कोई गंदगी दिखाई पड़ती है न उनके चले जाने के बाद कोई चिह्न शेष रह जाते हैं। आकाश मार्ग में वे कोई चिह्न नहीं छोड़ जाते। वे जैसे आते हैं बरसकर वैसे ही चले भी जाते हैं, जो कुछ शेष रह जाती है, वे हैं—उनके आगमन की स्मृतियाँ। ये स्मृतियाँ अथवा यादें कैसी हैं क्या आप बता सकते हैं? जी हाँ। वे सुख भरी हैं और उन विचारों से तन-मन सिहर उठता है। उनके साथ नवजीवन के प्रस्फुटन और विस्तार की सुधियाँ हैं जो सुख की सिहरन दे जाती हैं। यही नवजीवन खेतों, मैदानों, वनों में हरियाली के रूप में दिखाई पड़ रहा है, जो वर्षा के आगमन की, उसके उपकार की याद दिलाता है—सुखकर याद। अन्यथा बादलों का क्या? वे तो आते हैं, और चले जाते हैं। इतने विस्तृत विशाल नभ के किसी कोने में वे घर नहीं बना सकते। सच तो यह है कि सारे नभ में छाने के बाद भी कोई एक कोना तक उनका अपना नहीं है। 'मेरा न कभी अपना होना' पंक्ति में 'अपना होना' क्रिया पर ध्यान दीजिए। स्पष्ट ध्वनि है कि मेरे भाग्य में यह बदा ही नहीं है। यह पूर्व निश्चित है कि कोई कोना मेरा अपना नहीं होगा। यह जानते हुए भी बदली घिरती है, घुमड़ती है, बरसती है, और नवजीवन प्रदान कर चली जाती है। यही उसका इतिहास है कि वह कल उमड़ी थी तो आज अपना जल बरसाकर मिट गई। उसकी स्मृतियाँ भर रह गईं। उन्हीं स्मृतियों के सहारे संसार में उल्लास की सिहरन का अनुभव किया जा सकेगा।

प्रस्तुत गीत के भाव ग्रहण में चूंकि हम दूसरे स्तर पर विरहणी के पक्ष में भी अर्थ ढूँढ़ते आए हैं, तो इस दृष्टि से भी इन पंक्तियों में लक्ष्यार्थ ढूँढ़ा जा सकता है। कवयित्री मानो कह रही है कि संसार में उसके आने या चले जाने से कोई विशेष अंतर नहीं पड़ता। उसका कोई पद-चिह्न तक शेष नहीं रहता। हाँ, केवल स्मृतियाँ ही रह जाती

है। लोग उसकी वेदना को याद करते हैं और पुलकित होते हैं। इतने विस्तृत संसार के किसी कोने को वह अपना नहीं कह सकी। ऐसी नियति ही नहीं थी कि कोई कोना उसका अपना होता। उमड़ना और मिट जाना ही मानो उसका परिचय और इतिहास था।

टिप्पणी

1. उपर्युक्त गीत में महादेवी वर्मा ने अपने जीवन की तुलना बदली से करते हुए अपनी विरह-वेदना को अभिव्यक्त किया है।
2. महादेवी की करुणा और उसकी अभिव्यक्ति यहाँ अपने चरमोत्कर्ष पर है।
3. कवयित्री ने 'सुख की सिहरन हो अंत खिली' काव्य पंक्ति के द्वारा स्वयं की अमरता की ओर संकेत किया है।
4. निराशावादी दृष्टिकोण और जीवन के प्रति अनास्था का स्वर गीत के अंतिम अंश में मुखरित हो उठा है।
5. इन पंक्तियों में महादेवी जी ने मानव जीवन की वस्तुस्थिति का चित्रण किया है। वस्तुतः मानव जीवन क्षणिक है, वह चिरस्थायी नहीं है। जो आज है, वह कल नहीं होगा, अतः मानव जीवन का यही परिचय और इतिहास है कि वह आज है; किंतु कल नहीं होगा।
6. शुद्ध खड़ी बोली हिंदी संपूर्ण गीत में सरल रूप से प्रयुक्त हुई है।
7. गीत में रूपक, उपमा, पुनरुक्ति प्रकाश, अनुप्रास आदि अलंकारों की छटा जहाँ-तहाँ दिखाई पड़ती है। संपूर्ण गीत में मानवीकरण का बहुत सुंदर प्रयोग हुआ है।
8. वियोग श्रृंगार और लक्षणा शब्द-शक्ति का प्रयोग किया गया है।

पाठगत प्रश्न 14.1

दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों उत्तर दीजिए:

1. 'क्रंदन में आहत विश्व हँसा' कथन का भाव है कि बादलों के गरजने पर–
   (क) लोग हँसने लगे।
   (ख) चारों ओर चीख-पुकार मच गई।
   (ग) विरहिणी आहत हुई।
   (घ) ग्रीष्म की प्रखरता से पीड़ित लोग प्रसन्न हुए।

2. 'नभ के नवरंग बुनते दुकूल' का आशय है कि इंद्रधनुष–
   (क) बादलों के लिए कपड़े बुनते हैं।
   (ख) बादलों के साथ उड़ते रहते हैं।
   (ग) बादलों को रंगीन आभा देते हैं।
   (घ) प्रिय के दुपट्टेऽजैसा लगता है।

14.4 शिल्प सौंदर्य

आप महादेवी के काव्य व शिल्प से कुछ-कुछ परिचित हो चुके हैं। आइए, अब उनके शिल्प सौंदर्य की विशेषताओं पर ध्यान देते हैं।

आपने देखा कि महादेवी जी ने इस छोटे से गीत में गहन भाव पिरोए हैं। अर्थगांभीर्य का यह एक सुंदर उदाहरण है। काव्यार्थ दो स्तरों पर साथ-साथ खुलता है, अतः लक्षणा और व्यंजना शब्द-शक्तियों का सुंदर प्रयोग है। आप जानते हैं कि जब शब्दों के अर्थ सामान्य ढंग से न खुलकर लक्षणाऽके आधार पर खुलते हैं तो उसे 'लक्ष्यार्थ' कहा जाता है, जैसे—इन पंक्तियों की लाक्षणिकता पर ध्यान दीजिए:

*'पलकों में **निर्झरिणी** मचली,*
'क्षितिज भृकुटि पर घिर धूमिल'
***नवजीवन-अंकुर** बन निकली।*

पूरी कविता में रूपक अलंकार है।

कुछ कल्पनाएँ तो सचमुच बड़ी आकर्षक हैं—

'श्वासों से स्वप्न-पराग झरा', 'क्षितिज-भृकुटि', 'नवजीवन-अंकुर बन निकली'

कुछ छायावादी विशेषताओं की चर्चा हम पीछे भी कर आए हैं। कुछ और इस गीत के संदर्भ में देखिए:

1. मूर्त की अमूर्त से तुलना-

*मैं **क्षितिज-भृकुटि** पर घिर धूमिल,*
***चिंता का भार** बनी अविरल।*

2. अमूर्त की मूर्त से तुलना-

'मैं नीर** भरी **दुख की बदली'

3. अमूर्त की अमूर्त से तुलना-

***'सुधि मेरे आगम** की जग में*
***सुख की सिहरन** हो अंत खिली।'*

4. मानवीकरण

संपूर्ण कविता में मानवीकरण अलंकार है। मार्मिक स्थल देखिए:
'श्वासों से स्वप्न-पराग झरा'
'नभ के नवरंग बुनते दुकूल'
'क्रंदन में आहत विश्व हँसा'

5. वैयक्तिक व्यथा और भावनाओं का प्रकृति पर आरोप संपूर्ण कविता में है।

6. विशेषण विपर्यय - *'क्रंदन में आहत विश्व हँसा'*

इसके अतिरिक्त शब्द चयन, नादात्मकता, लघु छंद, गेयता, मधुरता आदि भी इस कविता की प्रमुख विशेषताएँ हैं। जैसा कि ऊपर बताया गया छायावादी काव्य की सभी विशेषताएँ उनकी रचनाओं में प्राप्त होती हैं। उनका मूल गुण है संवेदनशीलता। जो कुछ उन्होंने लिखा है, वह हृदय की अतल गहराइयों से उपजा प्रतीत होता है। करुणा, उदारता, रागात्मकता, विरह-पीड़ा, रहस्यात्मकता आदि काव्य की अन्य विशेषताएँ हैं। उन्होंने गीत ही अधिक लिखे हैं, जो मधुर भावों से ओत-प्रोत हैं।

महादेवी की भाषा बड़ी प्रांजल, संस्कृत-गर्भित और भावानुकूल होती है। वे शब्द चयन में बहुत कुशल हैं और प्रतीकों व रूपकों के माध्यम से बिंब निर्माण करती हैं। लाक्षणिकता उनकी भाषा का अन्य प्रमुख गुण है।

पाठगत प्रश्न 14.2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर दीजिए:

1. 'मैं नीर भरी दुख की बदली' में अलंकार है–

   (क) अनुप्रास (ग) उपमा

   (ख) रूपक (घ) उत्प्रेक्षा,

2. 'मैं क्षितिज-भृकुटि पर घिर धूमिल,

   चिंता का भार बनी अविरल'

   उपर्युक्त पंक्तियों में छायावादी विशेषताएँ हैं:

   (क) रूपक, मानवीकरण

   (ख) मानवीकरण, उत्प्रेक्षा

   (ग) मानवीकरण, मूर्त की तुलना अमूर्त से

   (घ) मानवीकरण, विशेषण विपर्यय

14.5 आइए, स्वयं पढ़ें

आप महादेवी और निराला के बारे में पढ़ चुके हैं। जान चुके हैं कि छायावाद क्या है? और उसकी कुछ विशेषताएँ छायावादी कवियों के संदर्भ में पढ़-समझ भी चुके हैं। छायावाद के एक और प्रसिद्ध कवि हुए हैं–जयशंकर प्रसाद। उनकी कविता की एक छोटी-सी झलक प्रस्तुत है:

आँसू

इस करुणा कलित हृदय में
अब विकल रागिनी बजती
क्यों हाहाकार स्वरों में
वेदना असीम गरजती?

शब्दार्थ

करुणा कलित – करुणा से पूर्ण
वेदना – पीड़ा

टिप्पणी

मानस सागर के तट पर
क्यों लोल लहर की घातें
कल कल ध्वनि से हैं कहती
कुछ विस्मृत बीती बातें?

आती है शून्य क्षितिज से
क्यों लौट प्रतिध्वनि मेरी
टकराती बिलखाती-सी
पगली-सी देती फेरी?

क्यों व्यथित व्योमगंगा-सी
छिटका कर दोनों छोरें
चेतना तरंगिनि मेरी
लेती है मृदुल हिलोरें?

बस गयी एक बस्ती है
स्मृतियों की इसी हृदय में
नक्षत्र लोक फैला है
जैसे इस नील निलय में।

चित्र 14.3

शब्दार्थ

मानस	– मन
विस्मृत	– भूली हुई
शून्य	– सुनसान, खाली
प्रतिध्वनि	– गूँज
बिलखाती	– बिलखती हुई
व्योमगंगा	– आकाश गंगा
तरंगिनि	– नदी
मृदुल	– मीठी, प्यारी
निलय	– घर

कविता का शीर्षक है 'आँसू', पर इन पंक्तियों में आँसू के प्रत्यक्ष वर्णन की अपेक्षा उन स्थितियों की तलाश अधिक है जो आँसुओं का कारण हो सकती हैं। लेखक प्रश्न पूछ कर कहना चाहता है कि ऐसा क्यों हो रहा है और ये प्रश्न प्रकृति के रहस्यमय क्रिया–कलापों के कारण पहले वह जानना चाहता है कि हाहाकार भरे स्वरों में असीम पीड़ा क्यों है?

दूसरे पद में क्या प्रश्न है? मानस सागर के तट पर कौन बातें कर रहा है? अपनी ही प्रतिध्वनि के लौटने का कारण भी कवि की समझ में नहीं आ रहा है। वह अपनी चेतना की हिलोरों के बारे में भी प्रश्न पूछ रहा है। कवि के प्रश्नों को समझिए और नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. 'आँसू' कविता किसने लिखी है?
2. किन पंक्तियों में कवि अपनी वेदना का प्रकृति में आरोप कर रहा है?
3. 'चेतना तरंगिनि' का दुखी होकर छिटकना क्या व्यंजित करता है?
4. कवि को भूली-बिसरी बातों की याद कौन दिला रहा है?
5. मानवीकरण के दो उदाहरण छाँटिए।
6. 'स्मृतियों की बस्ती बसने' का क्या आशय है?
7. सुधियों के आगमन के बारे में महादेवी और प्रसाद के कथन उद्धृत कीजिए।

टिप्पणी

14.6 आपने क्या सीखा

1. महादेवी वर्मा की रचनाओं में वैयक्तिक भावनाओं–प्रेम, विरह, पीड़ा आदि की अभिव्यक्ति हुई है।
2. बदली के उमड़ने, घिरने, बरसने के माध्यम से कवयित्री अपने मन में वेदना के उमड़ने और बरसने को संकेतित करती है।
3. कवयित्री अपनी वैयक्तिक भावनाओं का आरोप प्रकृति के क्रिया व्यापारों में करती है।
4. महादेवी की कविता में छायावादी काव्य की प्रायः सभी विशेषताएँ लक्षित होती हैं।

14.7 योग्यता विस्तार

कवि परिचय

महादेवी वर्मा मूलतः कवयित्री हैं, परंतु वे हिंदी के उन प्रतिष्ठित रचनाकारों में हैं, जिन्होंने कविता और गद्य-साहित्य दोनों क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा से यश अर्जित किया है। उनका जन्म 1407 ई. में उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद नगर में एक संपन्न और कला प्रेमी परिवार में हुआ। यद्यपि नौ वर्ष की अवस्था में ही उनका विवाह हो गया था, पर उन्होंने अपना अध्ययन जारी रखा। उनकी प्रारंभिक शिक्षा इंदौर में और उच्च शिक्षा इलाहाबाद में हुई।

प्रयाग (इलाहाबाद) ही महादेवी जी कर्मभूमि रही। वे आजीवन प्रयाग महिला विद्यापीठ की कुलपति रहीं। उनके कार्यकाल में यह संस्था प्रसिद्धि के शिखर तक पहुँची।

काव्य सृजन की ओर महादेवी की रुचि बचपन से ही थी। इसमें निरंतर विकास हुआ और वे छायावाद के प्रसिद्ध कवियों में गिनी जाने लगीं। उनकी प्रसिद्ध काव्य कृतियाँ हैं–'नीहार', 'नीरजा', 'यामा', 'रश्मि', 'सांध्यगीत' और 'दीपशिखा'।

इनके अतिरिक्त इन्होंने 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ', 'शृंखला की कड़ियाँ', 'पथ के साथी' आदि गद्य रचनाएँ भी हिंदी साहित्य को प्रदान की हैं।

साहित्यिक सेवा के लिए उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार, भारत-भारती पुरस्कार से सम्मानित किया गया और भारत सरकार की ओर से पद्मभूषण से अलंकृत किया गया।

14.8 पाठांत प्रश्न

1. 'मैं नीर भरी दुख की बदली' कविता का मूल कथ्य स्पष्ट कीजिए।
2. 'परिचय इतना, इतिहास यही' से कवयित्री का क्या तात्पर्य है? स्पष्ट समझाइए।
3. 'महादेवी जी के काव्य में छायावादी काव्य के लक्षण पर्याप्त दिखाई पड़ते हैं'- सोदाहरण सिद्ध कीजिए।

टिप्पणी

4. निम्नलिखित काव्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

(क) मैं क्षितिज-भृकुटि पर घिर धूमिल,
चिंता का भार बनी अविरल,
रज-कण पर जल-कण हो बरसी,
नवजीवन-अंकुर बन निकली !

(ख) विस्तृत नभ का कोई कोना,
मेरा न कभी अपना होना,
परिचय इतना, इतिहास यही,
उमड़ी कल थी मिट आज चली।

5. निम्नलिखित पंक्तियों के काव्य-सौंदर्य पर टिप्पणी लिखिए:

(क) स्पंदन में चिर निस्पंद बसा।

(ख) मैं नीर भरी दुख की बदली !

(ग) मैं क्षितिज-भृकुटि पर घिर धूमिल।

(घ) श्वासों से स्वप्न पराग झरा।

6. पठित कविता का केंद्रीय भाव लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए।

7. पठित कविता के आधार पर महादेवी वर्मा के काव्य की विशेषताएँ बताइए।

8. निम्नलिखित काव्य पंक्तियों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

प्राणों में चिर कथा बाँध दी!
क्यों चिर दग्ध हृदय को तुमने
वृथा प्रणय की अमर साथ दी!
हृदय दहन रे हृदय दहन
प्राणों की व्याकुल व्यथा गहन!
यह सुलझेगी होगी न सहन,
चिर स्मृति की श्वास-समीर साथ का।

(क) कविता में प्रणय का शाब्दिक अर्थ क्या है?

(ख) कविता का मूल आशय क्या है?

(ग) कवि ने प्राणों की व्यथा के सुलगने को असह्य क्यों कहा है?

(घ) 'चिरस्मृति की श्वास-समीर' से कवि का क्या आशय है?

14.9 उत्तरमाला

बोध प्रश्नों के उत्तर

1. नीर भरी दुख की बदली
2. मिट्टी पर जल की बूँदें पड़ने पर बीज का अंकुरण होना

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

14.1 1. (घ) 2. (ग)

14.2 1. (ख) 2. (ग)

आइए स्वयं पढ़ें के उत्तर संकेत

1. जयशंकर प्रसाद
2. इस करुणा कलित हृदय में.........वेदना असीम गरजती।
3. मीठी-मीठी यादों के रूप में चारों ओर फैल गई है।
4. मानस सागर के तट पर लहरों का टकराना
5. एकः चेतना तरंगिनि मेरी
   लेती है मृदुल हिलोरें

   दोः क्यों लौट प्रतिध्वनि मेरी
   टकराती, बलखाती-सी
   पगली-सी देती फेरी
6. पुरानी स्मृतियों का बार-बार याद आना
7. महादेवी– सुधि मेरे आगम की जग में
   सुख की सिहरन हो अंत खिली।

   प्रसाद– बस गई एक बस्ती है
   स्मृतियों की इसी हृदय में
   नक्षत्र लोक फैला है
   जैसे इस नील निलय में।